७. मेरे रजा साहब

– सुजाता बजाज

२३ जुलाई सुबह–सुबह ही समाचार मिला, रजा साहब नहीं रहे, और यह सुनते ही मानस पटल पर यादों की एक कतार–सी लग गई ।

पिछले फरवरी की ही बात है । मैं दिल्ली पहुँची थी अपनी 'गणपति प्रदर्शनी' के लिए । सोच रही थी कि रजा साहब शायद अपनी व्हीलचेअर पर मेरी प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर पर आ जाएँ पर उस रात कुछ अनहोनी–सी हुई । उस रात रजा साहब सपने में आए, मुझे उठाया, हमने बातें की, शो के लिए मुझे उन्होंने शुभकामना दी और कहने लगे, सुजाता एक बार मुझसे मिलने आ जाओ । अब मैं जाने वाला हूँ । इसके बाद तो रुकना मुश्किल था । मैं पहुँच गई उनसे मिलने । वे अस्पताल में शून्य की तरह लेटे हुए थे, मैंने उनके हाथों को छुआ । सिर्फ साँस चल रही थी । अलविदा कहकर लौट आई ।

रजा साहब अपने धर्म के साथ–साथ उतने ही हिंदू और ईसाई भी थे । उनके स्टुडियो में गणपति की मूर्ति, क्रॉस, बाइबल, गीता, कुरान, उनकी माँ का एक फोटो, गांधीजी की आत्मकथा व भारत से लाई हुई मोगरे की कुछ सूखी मालाएँ, सब एक साथ रखा रहता था । वे गणेश को भी पूजते थे और हर रविवार को सुबह चर्च भी जाते थे ।

एक दिन जहाँगीर आर्ट गैलरी में प्रदर्शनी देखते हुए किसी ने कहा, अरे यह तो एस.एच. रजा हैं । मैं एकदम सावधान हो गई क्योंकि मेरी सूची में उनका भी नाम था । मैंने उनके पास जाकर कहा–''रजा साहब, आपसे बात करनी है !'' वे देखते ही रह गए ! उन्होंने मुझे इंटरव्यू दिया, बहुत सारी बातें हुईं । अचानक मुझसे पूछने लगे कि आप और क्या–क्या करती हैं । मैंने कहा, ''मैं कलाकार हूँ, पेंट करती हूँ ।'' वे तुरंत खड़े हो गए और कहने लगे, ''चलो तुम्हारा काम देखते हैं ।''

मैं सोच में पड़ गई–मेरा काम तो पुणे में है । उन्हें बताया तो वे बोले, ''चलो पुणे ।'' ताज होटल के सामने से हमने टैक्सी ली और सीधे पुणे पहुँचे । उन्होंने मेरा काम देखा और फिर कहा– ''आपको पेरिस आना है । आपका भविष्य बहुत उज्ज्वल है ।''

छोटी–से–छोटी बात भी उनके लिए महत्त्वपूर्ण हुआ करती थी । बड़ी तन्मयता और लगन के साथ करते थे सब कुछ । पेंटिंग बिकने के बाद पैकिंग में भी उनकी रुचि हुआ करती थी । कोई इस काम में मदद करना चाहता तो मना कर देते थे । किसी को हाथ नहीं लगाने देते थे । बड़े करीने से, धैर्य के साथ वे पैकिंग करते । कहते थे– ''लड़की ससुराल

परिचय

जन्म : १९५८, जयपुर (राजस्थान)
परिचय : सुजाता बजाज जी एक प्रसिद्ध चित्रकार हैं । आजकल आप पेरिस में रहती हैं । आपके चित्र एवं मूर्तिकला भारतीय रंग में डूबी हुई रहती हैं । आपके चित्रों एवं मूर्तियों पर प्राचीन संस्कृति एवं कला की छाप दिखाई पड़ती है । आपने अपनी कला में ऐसी दुनिया का सृजन किया है, जिसमें सादगी भी है और रंगीनी भी, खुशी भी है और गम भी ।
प्रमुख कृतियाँ : सुजाता जी द्वारा बनाए गए 'गणेश जी के चित्रों पर आधारित' एक पुस्तक प्रकाशित ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत पाठ में प्रसिद्ध चित्रकार सैयद हैदर रजा के बारे में लेखिका सुजाता बजाज ने अपने संस्मरण लिखे हैं । यहाँ रजा साहब के सर्वधर्मसमभाव, मानवमात्र से प्रेम, युवा कलाकारों को प्रोत्साहन, उनकी जिज्ञासावृत्ति, कृतियों के प्रति लगाव आदि गुणों को दर्शाया है । इस पाठ में एक सच्चे कलाकार के दर्शन होते हैं ।

मौलिक सृजन

'कला से प्राप्त आनंद अवर्णनीय होता है ।' इसपर अपने मत लिखो ।

जा रही है, उसे सँभालकर भेजना है ।'' जब वे किसी को पत्र लिखते या कुछ और लिखते थे तो मत पूछिए, हर शब्द, हर पंक्ति को नाप-तौलकर लिखते थे । फूल उन्हें बहुत प्यारे लगते थे ।

मुझे याद है २२ अक्तूबर, १९८८ को मैं लंदन से पेरिस के गारदीनो स्टेशन पर ट्रेन से पहुँची थी । रजा साहब स्टेशन पर मेरा इंतजार कर रहे थे । ट्रेन लेट थी पर वे वहीं डटे रहे । मुझे मेरे होस्टल के कमरे में छोड़कर ही वे गए ।

एक दिन मैं बीमार होकर अपने कमरे में पड़ी थी । रात ग्यारह बजे रजा साहब मेरे लिए दवा, भारतीय रेस्टॉरेंट से खाना पैक करवाकर पहुँच गए । मेरे घरवालों को फोन करके कहा-''आप लोग चिंता न करें, मैं हूँ पेरिस में सुजाता की चिंता करने के लिए ।''

हर बार जब मैं या रजा साहब पेंटिंग पूरी करते तो सबसे पहले एक-दूसरे को दिखाते थे । दोनों एक-दूसरे के ईमानदार समालोचक थे । हमने मुंबई, लंदन, पेरिस और न्यूयॉर्क में साथ-साथ प्रदर्शनियाँ कीं पर कभी कोई विवाद नहीं हुआ । यह उनके स्नेह व अपनेपन के कारण ही था ।

हिंदी, उर्दू तो हमेशा से ही बहुत अच्छी रही है उनकी । अंग्रेजी-फ्रेंच भी वे बहुत अच्छी लिखते थे । कविताओं से बहुत प्यार था उन्हें । शेर-गजल व पुराने हिंदी फिल्मी गाने बड़े प्यार से सुनते थे । एक डायरी रखते थे अपने पास । हर सुंदर चीज को लिख लिया करते उसमें। मेरी बेटी हेलेना बहुत खूबसूरत हिंदी बोलती थी तो उन्हें बहुत गर्व होता था । वे हमेशा उसके साथ शुद्ध हिंदी में ही बात करते ।

रजा साहब को अच्छा खाने का बहुत शौक था पर दाल-चावल, रोटी-आलू की सब्जी में जैसे उनकी जान अटकी रहती थी । मैं हफ्ते में एक बार भारतीय शाकाहारी खाना बनाकर भेजती थी उनके लिए, उनके फ्रांसीसी दोस्तों के लिए ।

रजा साहब के कुछ पुराने फ्रांसीसी दोस्तों को उनके जाने की खबर देने गई तो फिर से एक बार उनकी दीवारों पर रजा साहब की काफी सारी कृतियाँ देखने का मौका मिल गया । मैं हमेशा कहती, रजा साहब आप मेरे 'एन्जल गारजियन' हैं तो मुस्कुरा देते पर सन २००० के बाद से कहते, 'क्यों, अब हमारी भूमिका बदल गई है-तुम मेरी एन्जल गार्जियन हो । अब मैं नहीं ।'

— ० —

लेखनीय

हस्तकला प्रदर्शनी में किसी मान्यवर को अध्यक्ष के रूप में आमंत्रित करने के लिए निमंत्रण पत्र लिखो ।

पठनीय

अंतरजाल से ग्राफिक्स, वर्ड आर्ट, पिक्टोग्राफ संबंधी जानकारी पढ़ो और उनका प्रयोग कहाँ-कहाँ हो सकता है, यह बताओ ।

श्रवणीय

दूरदर्शन पर किसी कलाकार का साक्षात्कार सुनो और कक्षा में सुनाओ ।

संभाषणीय

किसी प्रसिद्‌ध चित्र के बारे में अपने मित्रों से चर्चा करो ।

शब्द वाटिका

करीने से = तरीके से, सलीके से
समालोचक = गुण-दोष आदि का प्रतिपादन करने वाला
जिज्ञासा = उत्सुकता
अनहोनी = असंभव, न होने वाली

*** सूचनानुसार कृतियाँ करो :-**

(१) संजाल पूर्ण करो :

रजा साहब की स्वभावगत विशेषताएँ

(२) कृति पूर्ण करो :

दोनों ने मिलकर चित्रों की प्रदर्शनियाँ यहाँ की थीं ।

(३) सूची तैयार करो :

१. पाठ में आए विविध देशों के नाम ।
२. पाठ में उल्लिखित विविध भाषाएँ ।

(४) कृति पूर्ण करो :

खाने की इन चीजों में रजा साहब की जान अटकी रहती

भाषा बिंदु पाठ्‌यपुस्तक से दस वाक्य चुनकर उनमें से उद्‌देश्य और विधेय अलग करके लिखो ।

उपयोजित लेखन 'जहाँ चाह होती है वहाँ राह निकल आती है', इस सुवचन पर आधारित अस्सी शब्दों तक कहानी लिखिए ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन किसी गायक/गायिका की सचित्र जानकारी लिखो ।

IY6XKS